डरते हैं तो करते ही क्यों हैं...!

फिल्म 'न्यूड' और 'एस दुर्गा' की कहानी ऐसी है कि भारतीय सिनेमा को नई ऊंचाइयों पर ले जाती है। महिलाओं के मसले पर ये दोनों फिल्में नई कहानियां कहती है, पर इनके नाम को लेकर शुरू हुई बातें गोवा फिल्म फेस्टिवल के शुरू होने के पहले ही बतंगड़ तक पहुंच गई हैं। जूरी ने इन दोनों फिल्मों को पसंद किया था, पर न जाने इनके नाम से डरी सरकार ने क्यों इन्हें दिखाने की मंजूरी नहीं दी। 'न्यूड' तो अच्छी कहानी है, वहीं 'एस दुर्गा' का नाम पहले 'सेक्सी दुर्गा' था, जिस पर कुछ लोग नाराज थे। इसकी भी कहानी शानदार है, पर सरकार ने दोनों को ही नजरअंदाज कर दिया। क्या सरकार इतना डरती है?

गोवा फिल्म फेस्टिवल में शुरुआत ही बिगड़ गई है। बोलने की आजादी पर बात आ गई और फेस्टिवल में दिखाने के लिए फिल्में चुनने के लिए बनी जूरी के लोग भी खफा हो गए। 'कहानी', 'कहानी-2' और 'सत्यान्वेषी' जैसी फिल्मों से अपने काम को लेकर बखूबी पहचान बना चुके सुजॉय घोष की समझ में भी यह नहीं आया, जो जूरी के मुखिया थे।

जूरी में शामिल खास लोगों में नई पीढ़ी की फिल्मों की अगुवाई कर रहे निखिल आडवाणी, ज्ञान कोरिया जैसे नाम भी हैं, जिन्होंने फेस्टिवल में दिखाने के लिए फिल्में चुनी थीं। उनकी पसंद की 21 फिल्मों में **'एस दुर्गा'** और **'न्यूड'** जैसी फिल्में थीं, जो आज के दौर की कहानियां कहती हैं। कोई 153 फिल्में एंट्री के लिए आई थीं और अठारह दिन से इनमें होड़ थी कि कौन-सी फेस्टिवल में दिखाई जाएगी। आखिर में सरकारी अफसरों के दफ्तर से यूं लगा कि जूरी के फैसले पर ही सवाल उठा दिए गए हैं। तेरह सदस्यों की जूरी के लोग इसी साल मुंबई में मिले और हमेशा की तरह पांच सितारा होटल में ठहरे, जिसका सारा खर्च सरकारी खजाने से हुआ। बस, यहीं से झगड़ा शुरू हुआ कि सरकार पैसा खर्च कर रही है, तो मनमानी भी कर रही है। 21 फिल्मों को दिखाया जाना था। जूरी के लोगों ने बिना छुट्टी लगातार काम कर सूची बनाई थी, लेकिन दो फिल्मों को गलत तरीके से हटा दिया।

इस फैसले की वजह पता की, तो बताया कि भारतीय पैनोरमा नियम 2017 के खंड 8.5 में लिखे नियमों के मुताबिक कहा गया है कि जूरी में शामिल लोगों का फैसला अंतिम और मानना जरूरी होगा, जिस पर कोई अपील या सुनवाई नहीं होगी। इस नियम के बावजूद जूरी के फैसले को मंत्रालय ने पलट दिया।

सुजॉय घोष के पैनल ने सरकार को बताया कि किसी भी बदलाव पर बताया जाना चाहिए, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। उनका गुस्सा जा रहा था और जूरी वालों के पास भी समय कम था। उन्हें लग रहा था कि उन्हें अपमानित किया जा रहा है। उनकी पसंद से छेड़छाड़ की जा रही है, जो कि नियमों के खिलाफ है। जूरी को लग रहा था कि उनके समय और समझ की कोई कद्र नहीं है। दो फिल्मों के हट जाने के बाद फिल्मों के स्लॉट खाली हो गए थे, जिन्हें भरा जाना था, पर जूरी के पास इंतजार के सिवाय कोई चारा नहीं था।

चेन्नई से गौतमन भास्करन

मैंने **'न्यूड'** तो नहीं देखी, लेकिन इसके बारे में सुना है, फिल्म अच्छी है। इसे बनाने वाले रवि जाधव राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता हैं और मुंबई में सर जेजे स्कूल ऑफ आर्ट के छात्र रहे हैं। फिल्म **'न्यूड'** एक महिला की कहानी कहती है, जो अपने परिवार से छिप कर चित्रकारों की मॉडल है। जाधव कहते हैं कि फिल्म में नग्नता को उन्होंने सौंदर्य शास्त्र के तौर पर पेश किया है, जो मेरे अनुभवों पर आधारित है। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जिस पर इतना सोचा जाए या बवाल हो।

भारत में सुजॉय घोष और उनकी टीम के लोगों ने तो यही सुझाव दिया था कि इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (आईएफएफआई) की शुरुआत इसी फिल्म से हो। फेस्टिवल 20 से 28 नवंबर तक पणजी में होना है, लेकिन इस फिल्म की शुरुआत का मौका फिल्म 'पीहू' को मिला, जो विनोद कापड़ी ने बनाई है।

खैर, मुझे आज तक यह समझ नहीं आया कि नग्नता को स्क्रीन पर क्यों नहीं समझाया जा सकता। इस पर ना ही क्यों होती है। क्यों सेक्स और चुंबन पर इतना सोचना पड़ता है। वो भी आज के समय में, जबकि ये दौर बहुत आगे का है। क्या इस उम्र में ये सब रोक-टोक गलत नहीं है? ये दोहरे मापदंड अपनाने जैसा है, जबकि आइटम सांग और अश्लील डांस खुलेआम दिखाए जाते हैं, पर सार्थक फिल्म के नाम को लेकर ऐतराज दिखाया जाता है। एक तरफ ये लोग, महिलाओं के सम्मान और हित की बात करते हैं, दूसरी ओर उनके मसलों पर बनी अच्छी फिल्मों पर सवाल उठाते हैं। उन पर रोक लगाते हैं। उन लोगों को उत्तेजक डांस दिखाती, आपत्तियों से भरी और अश्लीलता से भरी दूसरी फिल्मों पर रोक लगाने का विचार भी नहीं आता। **'एस दुर्गा'** बनाने वाले सनल शशिधरन की इस फिल्म का नाम **'सेक्सी दुर्गा'** था। यह ऐसी फिल्म है, जिसे नहीं दिखाना नाइंसाफी होगी। शशिधरन युवा सोच के लिए जाने जाते हैं। उनकी पहचान **'एन ऑफ डे गेम'** से भी है, जिससे उन्हें खूब तारीफ मिली है। अब **'एस दुर्गा'** बना कर उन्होंने सिनेमा को ऊंचाई दी है। इस फिल्म की कहानी में युवा दंपती है, जो घर से भाग रहे हैं और आधी रात, सड़क पर अकेले चलते लिफ्ट मांगने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें रेलवे स्टेशन पहुंचना है, जहां से वो चेन्नई जाने की कोशिश में हैं। एक छोटी वैन रुकती है और उन्हें लिफ्ट देती है, जिसमें दो गुंडे आदमी बैठे थे। बस, यहीं से उन दोनों के सफर की कहानी शुरू होती है। इस फिल्म में भी गलत कुछ नहीं है। बस, नाम पर अफसरों को आपत्ति हो गई। शशिधरन को जानने वाले जानते हैं कि वो कभी हिंसा दिखाने में यकीन नहीं करते। उनकी फिल्म में न तो बलात्कार है, न झगड़ा है, यहां तक कि दांत से काटने का भी कोई सीन नहीं है। यही तो हुनर है कि फिल्म में बिना हिंसा के कैसे आक्रामकता को फिल्माया जाए। शशिधरन का यह शानदार तरीका स्त्री और पुरुष में डर की गहरी भावना पैदा कर निकालता है और दर्शक भी उसे महसूस करते हैं। फिल्म में केरल की सड़क पर उस दंपती के साथ कुछ गलत हो सकता है, इसकी कल्पना पैदा करना ही सिहरन पैदा करता है, जो इस असहजता को फिल्म बखूबी दिखाती है। फिल्म देखने वालों के मन में हजारों सवाल आते हैं। क्या बलात्कार होगा या हत्या होगी या कुछ और! शशिधरन ने कलात्मक शैली में इस फिल्म को बहुत ही खूबसूरती से फिल्माया है और डर हर समय बना रहता है, जिसमें भय और भयावह होने का अंदेशा बना रहता है, जो वास्तविक हिंसा से कहीं और ज्यादा हो सकता है।

यह बहुत ही निराश करने वाला है कि कई फिल्म पुरस्कार जीतने वाली फिल्म **'एस दुर्गा'** गोवा फेस्टिवल से बाहर है। इस फिल्म ने रोटरडम फिल्म फेस्टिवल में भी अवार्ड जीता और **'न्यूड'**, जो कि गोवा फेस्टिवल में भारतीय सिनेमा की अगुवाई करने लायक है, उसे भी इसी से हटा दिया गया।